उत्पादकता बढ़ाने के कार्य चुनौती के रूप में स्वीकार किया है। आरोग्यधाम के द्वार से लगे दतिया अखाड़े की गौशाला इसका उदाहरण है जहां तीन पीढ़ियों का गाय परिवार रह रहा है। गांव में कम हो रहे पशुपालन को बढ़ावा देने की दिशा में राष्ट्रऋषि नानाजी ने सार्थक प्रयास किया। दीनदयाल शोध संस्थान की स्थापना चित्रकूट में करते समय उन्होंने देशी नस्ल की गायों के संरक्षण का अलग प्रावधान रखा। देश के विभिन्न राज्यों से ऐसी गायों को लाया गया जिनकी नस्ल लगातार घट रही है। श्रद्धेय नानाजी कहा करते थे कि भारतीय गाय का समाज के प्रति योगदान की पूर्णता मात्र दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र की प्रदायता से नहीं होती, बल्कि किसान के सहकर्मी बलिष्ठ बैल भी इसी गोमाता से प्राप्त होते हैं। चित्रकूट में गोवंश विकास एवं अनुसंधान केन्द्र बनाकर श्रद्धेय नानाजी ने साहीवाल, गिर, राठी, लालसिंधी, हरियाणा, थारपारकर, कॉकरेज, अंगोल, माल्वी, नागोरी, खिल्लार, लाल कंधारी, देवनी, वेचूर का संरक्षण किया। देश-समाज में गाय की उपयोगिता, श्रेष्ठता आदि काल से ही स्वीकार्य है। शास्त्रों-उपनिषदों में गाय, नन्दी पंचगव्य के विषय में बहुत कुछ बताया गया है। आधुनिक विज्ञान ने भी भारत में भारतीय-गोवंश की उपादेयता को मात्र स्वीकारा ही नहीं है अपितु सुदृढ़ राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य व्यवस्था एवं स्वावलज़्बी सामाजिक व्यवस्था में भारतीय गोंवश के योगदान को धनात्मक अनुपात में पाया है। गाय को सद्गुणों के कारण ही माता का सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। गोवंश की प्रमुख नस्लें एवं गोवंश की संज़्या में लगातार गिरावट आ रही है। उदाहरण के रूप में सन् 1947 में 1000 की मानव जनसंज़्या के मध्य गोवंश की संज़्या 453 थी जो सन् 1981 में 278, सन् 1991 में 216 तथा सन् 1998 में 140 रह गई है। इसी प्रकार गोवंश की अनेक नस्लें विलुप्त हो गई हैं या विलुप्त होने वाली हैं। जैव विविधिता से सज़्पन्न राष्ट्र में 26 नस्लें अभी भी अस्तित्व में हैं इनमें से 14 नस्लें चित्रकूट में संरक्षित हैं।

साहीवालः इसे मांटगोमरी, मुल्तानी और लोला नामों से भी जाना जाता है। साहीवाल गाय मुज़्य रूप से पंजाब, दिल्ली, हरियाणा और उज़र प्रदेश में होती है। यह गाय की अत्यधिक दुधारू किस्म है। तीन सौ दिनों में यह औसतन